आपातकाल में सृजन फुलवारी

मीना विवेक जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रफीक नागौरी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-110-7

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, रफीक नागौरी

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RAFIQ NAGAURI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	बहुत मजबूर हो जाती है	6
2.	दीप दिल के जलाए बैठा हूं	7
3.	बस किताबों में ही	8
4.	चांद के साथ	9
5.	इस तरह दुश्मनी तमाम करें	10
6.	माँ नाज़ नहीं कर सकती	11
7.	कब तक	12
8.	धार से दूर	13
9.	हिंदुस्तान ज़िन्दाबाद	14
10.	बापू	15
11.	बड़ी मुश्किल में जीवन	16
12.	मर रही दुनिया	17
13.	ए मौला	18
14.	कोरोना	19
15.	गुजर जाएगी	20
16.	कोरोना फौजियों सलाम	21

बहुत मजबूर हो जाती है

बहुत मजबूर हो जाती है तब एहसान लेती है।

कोई खुद्दार बेवा कब किसी से दान लेती है।

ग़रीबी सच भी बोले तो कोई सुनता नहीं साहब।

अमीरी झूठ भी बोले तो दुनिया मान लेती है।

बस इतना फर्क होता है हवस में और मुहब्बत में।

हवस ईमान लेती है मुहब्बत जान लेती है।

"रफीक" अपनी ग़ज़ल में खास तो कुछ भी नहीं लेकिन

मेरे लहजे से ये दुनिया मुझे पहचान लेती है।

दीप दिल के जलाए बैठा हूं

दीप दिल के जलाए बैठा हूं।
याद तेरी भुलाए बैठा हूं।

ज़ख्म रक्खे नहीं नुमाइश में।
चोट दिल में छुपाए बैठा हूं।

दिल के छाले हैं सब अज़ीज़ मुझे।
हर दवा से बचाए बैठा हूं।

वो न गुजरेंगे इस तरफ़ से "रफीक"।
मैं उन्हें आजमाए बैठा हूं।

बस किताबों में ही

बस किताबों में ही ये लिखा रह गया।
अब कहां दिल में लफ्जे वफा रह गया।

उस ने मांगा तो सर भी उसे दे दिया।
मेरे क़ातिल को फिर भी गिला रह गया।

बात जब उस की औलाद ने काट दी।
बाप का मुंह खुला का खुला रह गया।

कोई मरहम मेरे काम आया नहीं।
ज़ख्म दिल का हरा था, हरा रह गया।

जाने क्या बात उस गुलबदन में दिखी।
उस को देखा तो मैं देखता रह गया।

चांद के साथ

चांद के साथ जब से खड़े हो गए
जुगनू समझे कि हम भी बड़े हो गए

जब से अख़बार में उनकी फ़ोटो छपी
सबसे छत्तीस के आंकड़े हो गए

आई गूंगों के हाथों में जब रेवड़ी
हक़ जताने को बहरे खड़े हो गए

पढ़ रहे हैं ग़ज़ल लेके उस्ताद से
और समझते हैं शायर बड़े हो गए

ऐ रफ़ीक़ अब तरन्नुम से कैसे पढ़ें
अपने कमज़ोर ये फेफड़े हो गए।

इस तरह दुश्मनी तमाम करें

इस तरह दुश्मनी तमाम करें
पेश इक दोस्ती का जाम करें

नाम दुनिया में चाहते हैं तो
कोई इन्सानियत का काम करें

बुझ गए हैं जो रौशनी देकर
उन चिरागों का एहतराम करें

छुरियां उनके बग़ल में होंगी ज़रूर
मुंह से जो लोग राम राम करें

आजकल बस वही सियासत है
जिसमें इमली को लोग आम करें

पहले मां बाप की ज़ियारत फिर
शौक़ से आप चारों धाम करें

अपना दुश्मन जिसे समझते हैं
उससे पहले दुआ सलाम करें
लोग उक्ता गए हैं महफ़िल में
अब ये क़िस्सा यहीं तमाम करें

शायरों का ये काम है कि रफ़ीक
बस मोहब्बत जहां में आम करें

माँ नाज़ नहीं कर सकती

राज़ दुश्मन को बताए हों वतन के जिसने
ऐसे बेटे पे तो माँ नाज़ नहीं कर सकती।

मेरे मेहबूब को ले जाए पटा कर न कहीं।
मैं सहेली को भी हमराज नहीं कर सकती।

दोनों की माँ है मगर हद है मुकर्रर उसकी।
वो भी सलमान को अरबाज नहीं कर सकती।

जितनी हिम्मत भी हो भर दे वो मगर सच है यही।
माँ ममोले को तो शहबाज़ नहीं कर सकती।

जब तलक फ़ायदा सरकार को इसमें न दिखे।
तब तलक जंग का आगाज़ नहीं कर सकती।

कब तक

खुलती पापी न तेरे पाप की गठरी कब तक।
रहती बेबस यूं तेरे जाल में मछली कब तक।

आज गुलशन में हवाओं का चलन जो बिगड़ा।
ख़ुद को भंवरों से बचा पाएगी तितली कब तक।

ढील है रब की तरफ़ से इसे मौक़ा न समझ।
देखना ये है कि खींचेगा वो डोरी कब तक।

वोट हर बार मेरा लेके चले जाते हो।
आएगी बोलो मेरे गांव में बिजली कब तक।

हैसियत क्या है तेरी खूब तुझे जानते हैं।
पेट दाई से छुपाएगी तू पगली कब तक।

हम चरागों की हिफ़ाज़त में हैं लडने को खड़े।
सर पे अपने ये रहेगी बता आंधी कब तक।

अब तलक तो नहीं समझा मुझे दुनिया ने "रफीक"।
दुनिया समझेगी मेरे लफ़्ज़ के मानी कब तक।

धार से दूर

आज इंसान है दुनिया में यूं किरदार से दूर,
जैसे बेवा का बदन होता है सिंगार से दूर।

चेहरे बच्चों के निगाहों में फिरा करते हैं,
उनकी खातिर ही तो आया है वो घर बार से दूर।

जी हूज़ूरी की तो फितरत ही नहीं है उसकी,
इस लिए रहता है फनकार वो दरबार से दूर।

हकबयानी की सज़ा तुझको ये दुनिया देगी,
रह न पाएगा बहूत देर तलक दार से दूर।

सारे फुटपाथ के लोगों को सबक ऐसा मिला,
कि वो अब रहते हैं सलमान तेरी कार से दूर।

हाईजैकिंग के वो फंदे में फंसे हैं जब से,
लोग सपने में भी रहने लगे कंधार से दूर।

तू नक़ाब अपना ये चेहरे से हटाता ही नहीं,
कब तलक हम रहें ज़ालिम तेरे दीदार से दूर।

यूं ग़ज़ल तेरी असरदार है पर सुन ले रफीक,
दिल को जो चीर दे अब तक है ये उस धार से दूर।

हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद

दिल वही दिल है जो तस्वीर ए वतन बन जाए।
आंख वो आंख नज़र जिसको तिरंगा आए।

जान वो जान है जो जाए वतन की खातिर।
सर वही सर है जो सरहद पे कभी कट जाए।

वो काम कर कि क़ब्र की मिट्टी महक उठे।
इक पल में ही नसीब भी तेरा चमक उठे।

दे दे जो जान अपने वतन के लिए तो फिर।
इक पल में उस शहीद का चेहरा दमक उठे।

मजबूर हूं रफीक इसी गम से चूर हूं।
पैरों की वजह से मैं शहादत से दूर हूं।

सरहद पे जा के लड़ना तो बस में नहीं मेरे।
फिर भी वतन का अपने सिपाही ज़रूर हूँ।

बापू

जड़ पे नफ़रत की हुआ वार तुम्हारा बापू।
बना दुश्मन भी तरफदार तुम्हारा बापू।

वो हिमालय की भी चोटी तो लगे है छोटी।
इतना ऊंचा हुआ किरदार तुम्हारा बापू।

जिस से अंग्रेज़ हुकूमत भी डरा करती थी।
वो अहिंसा का था हथियार तुम्हारा बापू।

दुश्मनी तुम से निभाने में तो दुश्मन भी गिरे।
पर नहीं गिर सका मेयार तुम्हारा बापू।

खोट उसमें तो कोई ढूंढ न पाया अब तक।
आज भी सिक्का है कलदार तुम्हारा बापू।

वो विदेशों के 'रफीक' अपने ये कहते हम से।
अजब इन्सान था वो यार तुम्हारा बापू।

बड़ी मुश्किल में जीवन

बड़ी मुश्किल में जीवन हो गया है।
अचानक फेल इंजन हो गया है।

दिया दिल में वो रोशन हो गया है।
जो धड़कन की भी धड़कन हो गया है।

जो हमदर्दों को अपने मारे पत्थर।
वो खुद अपना ही दुश्मन हो गया है।

डटे हैं घर में सब सरहद के जैसे।
करोना सब का दुश्मन हो गया है।

यहां पर सांस भी लेना सम्भल कर।
ये अब ज़हरीला गुलशन हो गया है।

परिंदे घोंसलों में अपने बैठें।
उड़ानों पर भी बन्धन हो गया है।

जो खिदमत डॉक्टर ये दे रहे हैं।
पसीना इनका चन्दन हो गया है।

अदब का जो ये सरमाया मिला है।
"रफीक" अपना यही धन हो गया है।

मर रही दुनिया

आज बेमौत मर रही दुनिया।
रब से फिर भी न डर रही दुनिया।

लोग खुद को खुदा समझने लगे।
अपनी हद से गुजर रही दुनिया।

आंसुओं का है गाज़ा चेहरे पर।
जो लगा कर संवर रही दुनिया।

एक अंधा कुआं है लालच का।
उस कुएं में उतर रही दुनिया।

झूठ मक्र-ओ फरेब ज़ुल्म ओ सितम।
आज क्या क्या न कर रही दुनिया।

आदमी जानवर बना है "रफीक"।
इसलिए अब अखर रही दुनिया।

ऐ मौला

अपना जलवा दिखा दे तू मौला।
खार को गुल बना दे तू मौला।

चढ़ के सर जो हमारे है बैठी।
ये मुसीबत उठा दे तू मौला।

हमको दिखता नहीं है जो दुश्मन।
जिस्म उसका जला दे तू मौला।

चीन से वायरस जो है आया।
जड़ से इसको मिटा दे तू मौला।

हैं मुआफी के हम नहीं काबिल।
पर न ऐसी सजा दे तू मौला।

कोरोना

धूल तो इसको हम चटाएंगे।
लड़ के कोरोना को हराएंगे।

सेनिटाइज करेंगे खुद को हम।
और कोरोना को भगाएंगे।

दूर से ही सलाम बेहतर है।
हाथ तुम से नहीं मिलाएंगे।

हाथ धो कर पड़ेंगे जो पीछे।
वो यकीनन इसे हटाएंगे।

इतनी आसानी से न छूटेगा।
जड़ से कोरोना को मिटाएंगे।

जंग लड़ते हैं डाक्टर जितने।
हौसला उनका हम बढ़ाएंगे।
कौन तन्हाई में सुनेगा "रफीक"
ख़ुद को खुद की ग़ज़ल सुनाएंगे।

गुज़र जाएगी

सर पे जो आ पड़ी है, गुजर जाएगी।
यूं तो आफ़त बड़ी है, गुज़र जाएगी।

छांव भी इसके बाद आएगी, सब्र कर।
धूप माना कड़ी है, गुज़र जाएगी।

आंख में डाल कर आंख लड़ जाईये।
मौत आ कर खड़ी है, गुज़र जाएगी।

सदियां संकट की हमने गुजारीं कई।
आज तो इक घड़ी है, गुज़र जाएगी।

हौसलों से इसे हम भगाएं "रफीक"
रुकने पर जो अडी है, गुज़र जाएगी।

कोरोना फौजियों सलाम

आसमां की जमीं पर लिखा जिनका नाम।
कोरोना फौजियों को है दिल से सलाम।

डाक्टरों की है चिन्ता, बचे सबकी जान।
गोद में अपनी रक्खा ये हिंदोस्तान।

ड्यूटी करते हैं चाहे हो सर्दी ज़ुकाम।
कोरोना फौजियों को है दिल से सलाम।

जो निगम अमला है और पुलिस वाले हैं।
पांव में इनके देखो पड़े छाले हैं।

पल भी आराम को ये समझते हराम।
कोरोना फौजियों को है दिल से सलाम।

मेडिकल वाले सारे जबर्दस्त हैं।
इतने टेंशन में जीते हैं पर मस्त हैं।
ये "रफीक" अपने पीते हैं खिदमत का जाम।
कोरोना फौजियों को है दिल से सलाम।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

रफीक नागौरी

Email- rafiqueahmed.nagori@gmail.com

Mobile- 9893469148

वैसे तो साहित्यकार कभी भी रचना कर्म कर सकते हैं। आज देश जिस तरह की आपात काल की स्थिति से गुजर रहा है, उसमें एक साहित्यकार की भूमिका और ज्यादा बढ़ जाती है। उसे संकट से निपटने के लिए लोगों को प्रेरणा देना चाहिए। चीन से और पाक से युद्ध के समय भी हमारे रचनाकारों ने अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई थी और आज कोरोना काल में भी निभा रहे हैं। मैंने भी हौसला बढ़ाने के लिए कुछ रचनाएं लिखीं और सोशल मीडिया के जरिए लोगों तक पहुंचा दिया। अभी भी यह काम चल रहा है। देश को जब भी जरूरत पड़ेगी हम तैयार हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-110-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/